# चौथा अध्याय

## शमशेर की कविता का शिल्प --

४.१ प्रास्ताविक

४.२ शमशेर की कविता की भाषा

४.३ शमशेर की कविता में बिम्ब विधान

४.४ शमशेर की कविता में संगीत

४.५ शमशेर की कविता में तुकान्त एवं समान्त

४.६ निष्कर्ष

# चौथा अध्याय

## शमशेर की कविता का शिल्प --

### ४.१ प्रास्ताविक --

मूलत: साहित्य की हर विधा का अपना एक शिल्प-विधान होता है। कविता भी काव्य की एक महत्वपूर्ण विधा मानी गयी है। इसीलिए कविता का भी एक शिल्प-विधान है। शमशेर की कविता भी शिल्प विधान की दृष्टि से बन पडी है। शमशेर बहादुर सिंह एक सफल कवि हैं, लेखक हैं, और एक सफल ग़ज़लकार भी।

### ४.२ शमशेर की कविता की भाषा -

कविता में भाषा का विशेष महत्व होता है। वह केवल विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम नहीं है। कविता में भाषा और विचार साथ ही आते हैं। शमशेर कविता की सार्थकता रचनाकर्म में मानते हैं।

भाषा प्रयोग के प्रति शमशेर की सजगता के दर्शन होते हैं। अपने एक इण्टरव्यू में स्वयं शमशेर ने कहा था --

> " असल में मेरी दृष्टि-शिल्प-शैली पर शुरु से ही ज़्यादा रही है I am very conscious of style
> मैं बचपन से ही उर्दू और हिन्दी में तुलनात्मक दृष्टि से भी

पढता था । इंग्लिश से भी उन्हें कम्पेयर करता था । मैं ग्रॅमर पर बहुत ध्यान देता था । It was a joy for me, always a joy. My imagination had been awakened from the very beginning "[1]

शमशेर की कविता में उर्दू शब्दावली का ज्यादा इस्तेमाल हुआ है । शमशेर की कविता की भाषा रचनात्मक और संरचनात्मक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन पडी है ।

शमशेर की कविताओं में शब्दों के असामान्य प्रयोग मिलते हैं । लिंग के अप्रचलित प्रयोग इनमें से एक है । इससे कविता का `मैं' बहुत ज्यादा निजी हो गया है । `इतने पास अपने' कविता संग्रह की एक कविता `थरथराता रहा' में वे कहते हैं --

" थरथराता रहा जैसे बेंत
मेरा काय ... कितनी देर तक
आपादमस्तक " [२]

सामान्य रूप से काया शब्द प्रयुक्त होता है, लेकिन अपना निजत्व स्थापित करने के लिए वे `काय' शब्द लाते हैं ।

शमशेर के काव्य का एक विशिष्ट गुण यह है कि वे कम से कम शब्दों द्वारा अपने भावों के व्यक्त करते हैं । अपने आरम्भिक रचनाकाल में शमशेर की रचना भाषा उर्दू थी । वे काफी बाद में हिन्दी में आये ।

शमशेर की कविताओं में भाषा के अनेक स्तर देखने को मिलते हैं ये स्तर कई बार लिरिक का रूप निश्चित करते हैं,तो कई बार ये स्तर विषाय

और प्रयोगात्मकता भी निश्चित करते हैं । शमशेर की कविता में भाषा के विभिन्न रूपों के दर्शन होते हैं । ये उनकी भाषा - क्षमता को प्रकट करते हैं ।

शमशेर की कविता में उर्दू-फारसी और अरबी के शब्द मिलते हैं - जैसे - गिला, ख़याल, सिलसिला, गर्म, सफ़र, काफ़िला, जिगर, हुस्न, ख़ाबे - गराँ, चमन, इश्क, ज़िक्र, मजाक, नाज, क्यामत, तरन्नीजा, महफ़िल, ज़िन्दगी, यकीन, ख़ुदा, इस्म, कहकशाँ, बंदगी, मुकाम, इंतहा, दास्तान, वफ़ा आदि ।

शमशेर की ग़ज़लों में भी उर्दू, अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है । शमशेर ने अपनी कविता में हिन्दी - उर्दू और अंग्रेजी काव्य - परंपराओं और ललित कलाओं का भी प्रयोग किया है । शमशेर की प्रयोग शीलता उर्दू ग़ज़ल की शास्त्रीय परम्परा के साथ विकसित हुई और आज भी उसका सहअस्तित्व बना हुआ है । शमशेर का स्वर सदैव इतना आत्मीय है कि सम्प्रेषण की कठिनाई के बावजूद भावक उनसे एक अन्तरंग लगाव महसूस करता है ।

सामाजिक सत्य की तलाश करनेवाले शमशेर की कविताएँ, ' दूसरा सप्तक ' में सम्मिलित हैं । ' कुछ कविताएँ, ' , ' कुछ और कविताएँ, '' चुका भी हूं नही मैं ', ' इतने पास अपने ', ' उदिता ' आदि काव्य संग्रह शमशेर की कवि-गरिमाका परिचय देते हैं ।

शमशेर की भावना का क्षेत्र- व्यापक है । उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय हैं प्रकृति, प्रेम, समाज, सौन्दर्य, राजनीति, कला और मनुष्य ।

> " मेरी अधिकतर कविताएँ ऐसे ही आती हैं । और सारी कविताएँ अपनी भाषा के साथ, शब्दों के निश्चित क्रम के साथ आती हैं । अगर वह समय निकल गया, वह क्रम भी अगर गडगडा गया तो the poem has lost its meaning । कविता पूरी की पूरी शब्द के रूप के साथ आती है । मैं उसे तुरन्त कागज पर उतारना जरूरी समझाता हूं । "[3]

शमशेर की कविता में खास तौर से एक आन्तरिक संवाद या एकालाप के दर्शन होते हैं । जैसे कि 'साक्ष' कविता में देखिए --

" आज मेरे लिए तुम
उसकी हद हो ।
उस बात की हद हो
जो मेरे लिए हो --
तुम
वह मेरी
हद हो
तुम ।" [4]

भाषा की ध्वन्यात्मकता शमशेर को लुभाती है । मणिपुरी भाषा की ध्वन्यात्मकता के बारे में शमशेर कहते हैं --

" मुझे मणिपुरी काव्य-साहित्य का एक पैम्फलेट हाथ लगा । मैं प्रभावित हुआ । जिस तरह से उन्होंने अपनी भाषा पर उत्साह से लिखा था, मैं वाकई में शर्मिन्दा हुआ कि मैं इस अपनी एक भारतीय भाषा के बारे में नहीं जानता... मैं अपनी प्रयोगात्मक कविता में केवल उसका परिचय देकर कुछ 'इवोक' ( evoke ) करना चाहता था और विशिष्ट प्रसिद्ध नामों का जो ध्वनिगत सौन्दर्य है उसे मैं देना या प्रदर्शित करना चाहता था ।...
I wanted to give the flavour of the original pronunciation of the names ." [5]

अर्थात किसी भी भाषा का ऐसा ध्वन्यात्मक सौन्दर्य उनकी काव्य - रचना की प्रेरना हो सकता है । कभी कभी भाषा का चित्रात्मक सौन्दर्य भी

काव्य-सृजन का कारण होता है जैसे चीन कविता में देखा जा सकता है ।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि शमशेर बहादुर सिंह केवल उर्दू के शब्दों और केवल हिन्दी के शब्दों के प्रयोग के आधारपर कविता को हिन्दी या उर्दू के अंतर्गत मानने के पक्ष में नहीं है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शमशेर की कविता में भाषा के विभिन्न रूप पाये जाते हैं । ये उनकी भाषा क्षमता को प्रकट करते हैं ।

बेशक शमशेर उर्दू से हिन्दी में आये, जिस तरह से प्रेमचन्द ।

> " शमशेर ने तो भाषा का जो रूप अपनी कविताओं में उकेरा है वह उर्दू और हिन्दी - दोनों का मिला-जुला , समन्वित रूप है । वह सर्वथा उनका अपना, उनका निजी है । उर्दू और हिन्दी शब्द इतनी सहजता से उनकी कविता में एक साथ आते हैं कि कविता में वे कहीं भी अजनबी नहीं लगते । " [६]

शमशेर की कविता में दोनों भाषाओं का प्रयोग सफल प्रयोग देखने को मिलता है ।

## ४.३ शमशेर की कविता में बिम्बविधान --

बिम्बविधान की दृष्टिसे शमशेर बहादुर सिंह विशेष उल्लेखनीय है । शमशेर ने अपनी अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में बिम्बों के द्वारा प्रस्तुत किया है । बिम्बों के प्रयोग से उनकी कविताओंका सौन्दर्य प्रकट हुआ है । उनकी कविता में शाम, समुद्र, दिवस, सूर्य, आकाश, क्षितिज, नदी, धूप लहरें, किरणें, बादल आदि का बिम्बात्मक रूप में चित्रण हुआ है ।

शमशेर की कविताओं में विभिन्न रंगों के दर्शन होते हैं । रंग और रेखाओं के मिलन से वे एक अनूठा प्रभाव उत्पन्न करते हैं । इससे पाठक वर्ग भी प्रभावित होता है ।

शमशेर ने `ऊषा` का वर्णन इस प्रकार किया है --

> प्रात नभ था
> बहुत नीला शंख जैसे भोर का नभ
> बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
> कि जैसे धुल गयी हों ।`[७]`

प्रात:कालीन नीलिमा को बताने के लिए नीले शंख का बिम्ब चुना है । `शंख-ध्वनि` मांगल्य का प्रतीक है । तो जब `नीले शंख - सा आकाश है, तब वह मंगलमय बेला है, यह बात सूचित हो ही जाती है ।

`पीली शाम` के बिम्ब को कवि ने पनघट के पन्ने में रूपान्तरित किया है । वह पन्ने का रूपांतरण नारी के `मुखकमल` से कर रहा है --

> शान्त
> मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल
> कृश म्लान हारा-सा ।
> क्या मैं हूं वह
> मौनदर्पण में तुम्हारे कहीं ?`[८]`

इस `मुखकमल` में सुबह की ताजगी नहीं, शाम की कृशता, म्लानता और थकन है । शमशेर की `सागर तट` एक प्रतीकवादी रचना है । `सागर तट` में हर्ष के दो चित्र बनते हैं । जिन्हें समय की लहरें मिटा देती है । इस समूची प्रक्रिया को शमशेर एक अद्भुत बिम्ब का सहारा लेकर प्रस्तुत करते हैं --

" स्वप्न में रौंदी हुई सी विकल सिकता
पुतलियों सी
मूँद लेती आँख ।" [९]

शमशेर ने आसमान को बिम्ब के माध्यमसे प्रस्तुत किया है ।

" शाम सागर है, आकाश इन्द्रधनुषी ताल है
पूरा आसमान का आसमान है
एक इन्द्रधनुषी ताल
नीला साँवला हल्का गुलाबी
बादलों का घुला पीला है ।" [१०]

शमशेर पीले, नीले और साँवले रंगों से कविता को सँवारते हैं । कहीं कहीं गुलाबी और सुनहरी झलक भी मिलती है ।

" और फिर मानो कि मैं
एक मत्स्य हृदय में
बहुत ही रंगीन
लेकिन
बहुत सादा साँवलापन लिये ऊपर ।" [११]

शमशेर ने `सावन` को भी बिम्ब के माध्यम से प्रस्तुत किया है -- बादलों से आकाश स्वच्छ नहीं रहा - बादलों का मटियाला पर्दा एकसार फैला है पर पूरा नहीं बादल के धूमिल पर्दे के पीछे है --

" धूमिल अंगनारे के पीछे
वह मौन गुलाबी झालर
एकाएक उभरकर ठहरी, फिर मुद्धिम होकर मिट गयी
जैसे घोल गया हो कोई गँदले जल में
अपने हलकी - मेंहदीवाले हाथ । " [१२]

बिम्ब कविता की रचना - प्रक्रिया का अंग है । ` इतने पास अपने ` कविता संग्रह की एक कविता ` गोया वो ` देखिए --

" शफक नीलगूँ है
शफक और
नीलगूँ ... यों क्यों है
क्षितिज
एक धुँधला क्रिज है
जो यकायक उठ आता है
उठा चला आता है " । [१३]

एक नीला दरिया बरस रहा है ` यह कविता बिम्ब प्रधान है ।

" एक नीला दारया बरस रहा है
और बहुत चौडी हवाएँ हैं
मकानात हैं मैदान
किस कदर ऊबड खाबड । [१४]

इसमें विशिष्ट प्रकार का बिम्ब उपस्थित हो जाता है । नीला दरिया वह नहीं रहा है, बरस रहा है अर्थात यह दरिया की नहीं आकाश की बात है ।

रचना प्रक्रिया के सन्दर्भ में एक और बिम्बविधान देखिए --

" तब छन्दों के तार खिंचे - खिंचे थे
राग बँधा-बँधा था
प्यास उँगलियों में विकल थी -
कि मेघ गरजे
और मोर दूर और कई दिशाओं से ।" [१५]

'सींग और नाखून' कविता का आरम्भ ही एक ऐसे बिम्ब से होता है, जिसमें मनुष्य पशु बनता जा रहा है, इस बात को प्रस्तुत किया है --

" सींग और नाखून
लोहे के बख्तर कन्धों पर ।" [१६]

दिमाग और कर्म से मनुष्य पशु बनता जा रहा है एक ऐसा तर्क भी प्रस्तुत किया जा सकता है । इसमें भी देखा जा सकता है कि बिम्ब शमशेर की कविताओं के अर्थविकास में कैसे सहायक होते हैं । सूर्योदय का एक बिम्ब देखिए --

" जो कि सिकुड़ा हुआ बैठा था तो पत्थर
सजग-सा होकर पसरने लगा
आप से आप ।" [१७]

एक ऐसा बिम्ब उपस्थित होता है, जो स्पर्श है । पत्थर का कड़ापन मोम या किसी प्रवाही में बदल जाता है बिम्ब कविता में सन्दर्भ के साथ अर्थित होते हैं । पूरी कविता के सन्दर्भ में निम्नलिखित बिम्ब कितना अर्थ गर्भ है यह प्रस्तुत होता है । देखिए --

टूटते हैं बिजलियों के स्वप्न के आँसू
आँख-सी सूनी पडी है भूमि" ।[१८]

शमशेर की कुछ कविताएँ ऐसी हैं जो कि पूरी की पूरी बिम्बात्मक हैं । एक और बिम्ब देखिए --

"कबूतरों ने एक गजल गुनगुनायी
मैं समझा न सका, रदीफ-काफिये क्या थे
इतना खफीफ, इतना हल्का, इतना मीठा
उनका दर्द था ।"[१९]

एक बहुत ही विलक्षण बिम्ब इसमें है, जो शब्दों की विशेष अर्थगर्भता से वैसा बना है --

"एक खुशबू जो मेरी पलकों में इशारों की तरह
बस गयी है, जैसे तुम्हारे नाम की नन्ही-सी
स्पेलिंग हो, छोटी-सी, प्यारी-सी तिरली स्पेलिंग"[२०]

इसी तरह पूरा भूतकाल कवि की पलकों में बस गया है - एक संकेत रूपी सुगन्ध में । इस तरह से इस कविता में अनेक बिम्ब हैं जो इसमें निहित प्रेम के संवेदन को गहन और कविता के 'मैं' को उजागर करते हैं ।

शमशेर की कविता में 'शाम' का बिम्ब दृष्टिगोचर होता है । 'घिर गया है समय का रथ' इस रचना में 'शाम' का बिम्ब-पाया जाता है ।

"मौन सन्ध्या का दिये टीका
रात
काली
आ गयी ,
सामने ऊपर, उठाये हाथ-सा
पथ बढ गया ।"[२१]

ऐसी ही कुछ और कविताएँ हैं - `सावन`, `शाम और रात`, `तीन स्टैंजा` इतने पास अपने कविता संग्रह में `शाम सुबह, जिनमें इन समय - खण्डों की क्षण क्षण परिवर्तित नवीनता को चित्रित करनेवाले अनेक बिम्ब हैं।

बिम्ब जब बार बार प्रयुक्त होते है तब वह प्रतीक बन जाते हैं। शमशेर की कविताओं में शाम, गुलाब, दरिया, बादल, नींद और आईना बार बार आते हैं। शमशेर प्रस्तुत कविताएँ शाम का चित्रण किया गया है --

`हार-हार समझा मैं, `चेहरों की शामों में `टूटी हुई, बिखरी हुई`, `शाम सुबह,`` फिर भी क्यों`, `ये शाम है`, `राग`, `सावन` । इन कविताओं में शाम का वर्णन है। इसके अतिरिक्त - `सारनाथ की एक शाम` `लहरें`, `शाम`, `वह नगर` ऐसी ही रचनाएँ हैं। यहाँ `शाम` एक तरह से कवि-चेतना का पर्याय बनकर भाती है। उनकी कविता में जो उदासी का स्वर है, वह शाम के विभिन्न अनुभवोंमें प्रकट होता है।

शमशेर ने आइने के बिम्ब को प्रस्तुत किया है। शमशेर की कविताएँ बिम्बों की विविधता है। बिम्ब उनकी रचना की अनिवार्यता बनकर आते हैं। कहीं पर शमशेर ने सौन्दर्य और सत्य जैसे शाश्वत मूल्यों को भी बिम्बों के द्वारा अभिव्यक्त किया है। कहीं पर पूरी की पूरी कविताएँ बिम्बात्मक है। एक तरह से उनकी कविताएँ सौन्दर्य का विस्तार है। कुछ ऐसे बिम्ब भी हैं, जो बार-बार कविता चेतना को आकृष्ट करते हैं, अत: कविता में बार बार आते हैं - शाम, आइना, गुलाब ऐसे ही कुछ बिम्ब हैं।

## ४.४ शमशेर की कविता में संगीत --

वास्तव में संगीत भी जीवन की एक विधा मानी गयी है। शमशेर की कविता में संगीत पाया जाता है। संगीत कवियोंमें शमशेर का स्थान अग्रणी माना जाता है। संगीत का तात्पर्य है, `लिरिक काव्य` से जिसमें संगीत के तमाम रूपों का समावेश हो जाता है। जैसे -- गीत, सॉनेट, ओड, एलिजी, गजल, रुबाई, कतआ आदि।

शमशेर की कविता पर पाश्चात्य और उर्दू काव्य परंपरा का प्रभाव है। शमशेर ने ग़ज़ल, रुबाई, क्तआ, सॉनेट, ओड, एलिजी आदि लिखे हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत वृत्तों में प्रयोग भी किये हैं। उर्दू परम्परा का शमशेर पर अधिक प्रभाव है।

शमशेर की ग़ज़लों में संगीत गूँजता हुआ महसूस होता है। इसकी क्या वजह हो सकती है? जाहिर है कि उनकी गजलों में लय एवं ताल का अनोखा संगम हुआ है। कोई गायक एवं गायिका शमशेर की गजलों को अपनी सुरीली आवाज में प्रस्तुत कर सकती है। संगीत की दृष्टि से शमशेर की यह गजल बडी प्रभावपूर्ण है।

"मैं आपसे कहने को ही था, फिर आया खयाल एकाएक/कुछ बातें समझाना दिल को, होती हैं मोहाल एकाएक/साहिल पे वो लहरों का शोर, लहरों में वो कुछ दूर की गूँज/कल आपके पहलू में जो था, होता है निढाल एकाएक/जब बादलों में घुल गयी थी कुछ चांदनी-सी शाम के बाद, क्यों आया मुझे याद अपना वह माहे-जमाल एकाएक/सीनों में कयामत की हूक, आँखों में कयामत की शाम, दो हिज्र की उम्रें हो गयीं दो पाव का विसाल एकाएक/ दिल यों ही सुलगता है मेरा, फुँकता है यूँ ही मेरा जिगर, तलछट को अभी रहने दे, सब आग न ढाल एकाएक/ जब मौत की राहों में दिल जोरों से धडकने लगता, धडकन को सुलाने लगती उस शाख की चाल एकाएक/हाँ, मेरे ही दिल की उम्मीद तु है, मगर ऐसी उम्मीद, फल जाय तो सारा संसार हो जाय निहाल एकाएक/ एक उम्र की सरगरदानी लाए वो घडी भी शमशेर बन जाये जवाब आपसे आप आँखों का सवाल एकाएक/" २२

ग़ज़ल को जब संगीत का साथ मिलता है तब क्या कहते। ग़जल का हर शब्द संगीत की सरिता से भीग जाता है। ग़जल सरिता जैसे हिलोरें लेने लगती है। शमशेर के ये कुछ शेर द्रष्ठव्य हैं --

" कोई तो साथ साथ मेरी बेखुदी में था
मैं कैसे अपने होश में आया, जवाब दो
उम्मीदे वस्ल हो, कि बहाना हयात का
तुम मेरे दिल में हो, मेरे दिल का जवाब दो । "[२३]

संगीत की दृष्टि से शमशेर की ग़ज़लें बड़ी यादगार बन पड़ी हैं । प्रस्तुत है यहाँ उनकी एक और ग़ज़ल जिसमें संगीत है --

" यहाँ कुछ रहा हो तो हम मुँह दिखाएँ
उन्होंने बुलाया है क्या ले के जाएँ
कुछ आपस में जैसे बदली सी गयी हो
हमारी दुआएँ तुम्हारी बलाएँ
तुम एक ख़ाब के जिसमें खुद खो गये हम
तुम्हें याद आएँ तो क्या याद आएँ
वो एक बात जो ज़िन्दगी बन गयी है
जो तुम भूल जाओ तो हम भूल जाएँ
वो ख़ामोशियाँ जिनमें तुम हो न हम हैं
मगर हैं हमारी तुम्हारी सदाएँ
बहुत नाम हैं एक `शमशेर` भी है
किसे पूछते हो, किसे हम बताएँ । " [२४]

## ४.५ शमशेर की कविता में तुकान्त एवं समान्त --

ग़ज़ल में तुकान्त ( क़ाफ़िया ) एवं समान्त ( रदीफ़ ) का बड़ा महत्व रहता है । इनके बिना ग़ज़ल `ग़ज़ल` नहीं होती है । कोई भी नामवर ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लों में तुकान्त एवं समान्त की ओर विशेष ध्यान देता है । शमशेर की ग़ज़लें इस दृष्टि से बडी सफल बन पड़ी है ।

तुकान्त एवं समान्त की दृष्टि से उनकी यह ग़ज़ल बड़ी उम्दा कही जा सकती है --

" वही उम्र का एक पल कोई लाए
तड़पती हुई-सी ग़ज़ल कोई लाए
हकीकत को लाए तखैयुल से बाहर
मेरी मुश्किलों का जो हल कोई लाए
कहीं सर्द खूं में तड़पती है बिजली
जमाने का रद्दो-बदल कोई लाए
उसी कम निगाही को फिर सौंपता हूँ
मेरी जान का क्या बदल कोई लाए
दुबारा हमें होश आए न आए
इशारों का मौका महल कोई लाए
नज़र तेरी दस्तूरे फिरदौस लाई
मेरी ज़िन्दगी में अमल कोई लाए " २५

तुकान्त - पल, गजल, हल, बदल, महल, अमल/समान्त - कोई लाए ।

शमशेर की एक और गजल प्रस्तुत है जिसमें तुकान्त एवं समान्त का बड़ा ही सार्थक प्रयोग हुआ है --

" फिर निगाहोंने तेरी दिल में कहीं चुटकी ली
फिर मेरे दर्द ने पैमान वफा का बाँधा
और तो कुछ न किया इश्क में पड़कर दिलने
एक इन्सान से इन्सान वफा का बाँधा
एक फाहा भी मेरे जख्म पे रक्खा न गया
और सर पे मेरे एहसान दवा का बाँधा
इस तकल्लुफ की मोहब्बत थी कि उठते ही बनी
रंग यारों ने वो मेहमानसरा का बाँधा
मौसमे अब्र में आता है मेरे नाम य हुकम

" कि खबरदार जो तूफान बला का बाँधा
मुस्कराते हुए वह आए मेरी आँखों में
देखते क्या सरोसामान कजा का बाँधा । " [२६]

तुकान्त - वफा, दवा, मेहमानसरा, बला, कजा ।
समान्त - बाँधा ।

संक्षेप में शमशेर की ग़ज़लों में सांगीतिकताके दर्शन होते हैं । उनकी ग़ज़लों में लय एवं ताल का अनूठा मिलाप नज़र आता है । `गेयता` शमशेर की ग़ज़लों की प्रमुख विशेषता है । शमशेर का काव्य संगीतात्मकताके अमर बन पडा है । शमशेर की ग़ज़लें एवं कविताएँ संगीत के कारण ही सार्थक बन पड़ी है ।

४.६ निष्कर्ष --

शमशेर की कविता की भाषा में ताजगी है, प्रवाह है, ध्वन्यात्मकता है । बिम्बों की विविधता के कारण उनकी कविता पाठकों पर अपना प्रभाव डालती है । शमशेर की कविता की भाषा पर उर्दू का ज्यादा प्रभाव रहा है । उर्दू शब्दों एवं अंग्रेजी शब्दों के कारण भाषा में स्वाभाविकता आयी है । शमशेर की कविता संगीत का साथ पाकर और निखरी है । समान्त एवं तुकान्त की कसौटी पर भी शमशेर की ग़ज़लें खरी उतरती है ।

## संदर्भ --


१ एक लम्बा इण्टरव्यू - शमशेर के साथ - डॉ.रंजना अरगडे, पृ.२२४

२ कवियों को कवि शमशेर - डॉ.रंजना अरगडे, पृ.७१

३ एक लम्बा इण्टरव्यू - शमशेर के साथ - डॉ.रंजना अरगडे, पृ.२०७

४ सात्र - `कुछ और कविताएँ', पृ.६५

५ एक लम्बा इण्टरव्यू - शमशेर के साथ - डॉ.रंजना अरगडे,पृ.२२४

६ कवियोंका कवि शमशेर - डॉ.रंजना अरगडे, पृ.८६

७ `उषा' कुछ कविताएँ - पृ.१५

८ एक पीली शाम, कुछ कविताएँ, पृ.२१

९ सागर तट `कुछ कविताएँ - पृ.१७

१० पूरा आसमान का आसमान,कुछ कविताएँ,पृ.४१

११ - वही - पृ.४१

१२ कुछ और कविताएँ, सात्र,पृ.६०

१३ इतने पास अपने - पृ.२७

१४ चुका भी हूँ नहीं मैं - पृ.१७

१५ `राग' कुछ कविताएँ, पृ.१२

१६ कुछ और कविताएँ,सींग और नाखून - पृ.७४

१७ `सुबह', कुछ कविताएँ,पृ.३६

१८ यह विवशता,वही - पृ.५१

१९ कुछ और कविताएँ - टूटी हुई,बिखरी हुई, पृ.५१

२० - वही - पृ.५५

२१ - वही - घिर गया है समय का रथ, पृ.३८

२२ कुछ और कविताएँ । शमशेर - पृ.८१

२३ - वही - पृ.१२

२४ - वही - पृ.६७

२५ - वही - पृ.१७

२६ - वही - पृ.४१ ।